मां-बापों की माथापच्ची

❑ राम विलास जांगिड़

गिजूभाई भारतीय शिक्षा जगत में एक सुपरिचित नाम हैं । वे उन शिक्षाशास्त्रियों में हैं जो बाल मन की गहराइयों का प्रत्यक्ष अनुभव रखते हैं । उन्होंने एक सम्पूर्ण शिक्षाशास्त्र रचने का प्रयत्न किया जिसमें ऐसा कोई द्वैत नहीं है कि यह मेरे बच्चों के लिए नहीं बल्कि आपके बच्चों के लिए होगा । बच्चे ही नहीं, अभिभावक और शिक्षक भी उनकी चिंतन-धारा में बराबर की जगह रखते हैं । उनकी पुस्तकें आतंकित नहीं करती बल्कि सरल, सुबोध शैली और सहज प्रवाह से आकर्षित करती हैं । गिजू भाई के शिक्षा-चिंतन की जड़ें भारतीय जमीन में गहरे धंसी हैं लेकिन वे अतीतोन्मुख नहीं हैं । उन्होंने मोन्टेसरी पद्धति का भारतीयकरण किया।

रमेश एक नन्हा सा बालक । कक्षा दो का विद्यार्थी । विद्यालय में जाता है । अचानक कक्षा में बैठे-बैठे वह सिसकियां लेने लगता है । अध्यापक परेशान ।

तेरी तो हरदम आदत है । हमेशा रोता रहता है । विद्यालय में पढ़ने से जी चुराता है। लगता है फिर तू स्कूल से भागने की सोच रहा है । रमेश चुप लेकिन उसके ओंठ फड़फड़ाते रहे ।

बालक बैंच पर चढ़ने के लिए जूते खोलता है । उफ ! यह क्या ? उसके जूतों में नन्हा बिच्छू रेंग रहा था । धीरे-धीरे बालक के आंसू कम होते चले गये ।

कमोबेश यही स्थति है हमारे विद्यालयों की । इस स्थिति की नीवं डलती है हमारे घर-परिवार में । बालक के माता-पिता अक्सर ऐसी स्थितियों के लिए जिम्मेदार होते हैं ।

''मां-बापों की माथापच्ची'' पुस्तक में गिजुभाई बाल मन की अतल गहराई में उतरते चले गये । बालकों के सूक्ष्म मनोभावों को जिस तरह से उन्होंने इस पुस्तक में उकेरा है उसे देखते सभी मां बापों के लिए यह पुस्तक अनमोल रत्न है । बाल व्यवहार के जो शब्द-चित्र उकेरे हैं वस्तुत: व्यावहारिक, प्रासंगिक एवं वर्तमान समय में बालकों के प्रति सोचने को विवश कर देते हैं । प्रस्तुत पुस्तक को पढ़कर ऐसा लगता है कि संसार के प्रत्येक माता-पिता और शिक्षक को यह पुस्तक जरुर पढ़नी चाहिये। पुस्तक में दिये गये शब्द-चित्र मां-बापों की माथापच्ची के हैं लेकिन पुस्तक का अनुसरण करें तो यही माथापच्ची आनन्द का मार्ग बनकर बालक के स्वर्णिम भविष्य का आधार बन पड़ती है ।

आरंभ में ही एक मां का चित्र उकेरा है । वह अपनी बच्ची से परेशान है । खीजती है कि बालिका हर समय रोती रहती है । चिल्लाती है । झल्लाती है । सोते समय उसे पालने पर झुलाकर झूला देने पर रोने से तंग हो जाती है । मां उसकी परवाह किए बिना करवट बदलकर सो जाती है । अपने पति को ताना मारती है । आप सम्हालें । अभागी हरदम चिल्लाती है । पति बच्ची को देखता है। उसके झूले में खटमल बच्ची का खून चूस रहे थे । बच्ची को झूले में से निकाला । बच्ची का रोना बन्द ।

पुस्तक में बताया है कि किस तरह बालकों की हर एक गतिविधि महत्वपूर्ण होती है । बालकों द्वारा की गई हर एक गतिविधि के पीछे कारण है, रहस्य है ।

बालक अपने पिता से कहता है : पिताजी । चलिए, देखिए वह छिपकली उस पतंगे को खा रही है । देखने लायक है । चलिए, चलिए, नई चीज है । देख लीजिए ।

पिता के लिए उक्त बातें वर्षो पुरानी हैं । अति साधारण हैं। अगर पिता उक्त बात पर झल्लाकर बच्चे को बेवकूफ कहता है तो वह स्वयं संसार के सबसे बेवकूफ पिता में से एक होगा । होना यह चाहिये कि पिता को उस नन्हें वैज्ञानिक की नई खोज में शामिल
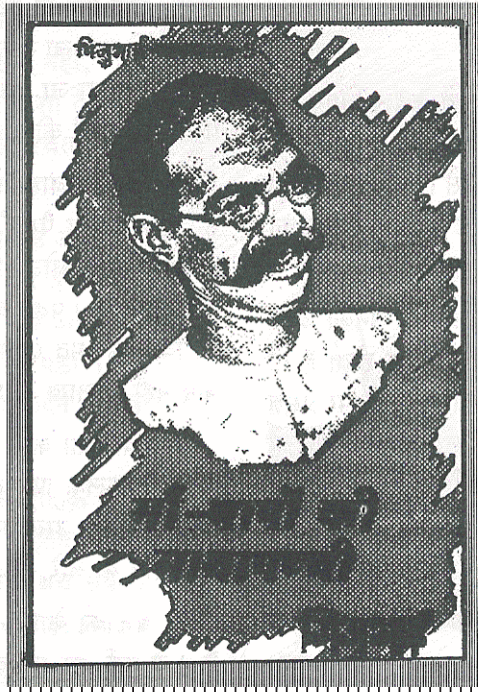
होना चाहिए । उस खोज में शामिल होते हुए पिता आनन्द का अनुभव करे । इसी दौरान वह छिपकली के संदर्भ में टिप्पणी दे। छिपकली एवं पतंगे के बारे में जानकारी दे और खेल ही खेल में बालक उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर ले । यह अपेक्षा की है गिजुभाई ने ।

आहा । तुम खेल कर आ गई ? आज तुमने कौन-कौन से खेल खेले ? सुनो अब जरा देर के लिए मेरे काम में मदद करोगी?

अब तुम घूम भटक कर आई हो । न काम, न काज, बस सारा दिन घूमना और घूमना । लो जूठन साफ करो । घर में झाडू कौन लगायेगा ? ये कपड़े कैसे फैले हैं ?

उक्त दो रीतियों में बच्चों से बातचीत का तरीका बताया है। बालकों के काम करने का तरीका अलग है । उनसे बात कैसे करें? बड़ा व्यावहारिक व महत्वपूर्ण विषय है । गिजुभाई ने पहली रीति से बालक से बात करके उसमें उत्साह, उमंग, विश्वास, स्वावलम्बन, व्यावहारिकता के कई गुणों को निचोड़ दिया है। बालकों की रगों में इन गुणों का लहू जैसे तीव्र वेग से प्रवाहित होने लग गया है। जबकि दूसरी तरह से बात करके उस बालक में बचे खुचे उत्साह, उमंग, व्यवहार को छीन लिया है। दोनों रीतियों से माता का अपना उद्देश्य पूरा होता है । तब क्यों न हम बालकों से प्रिय बोलें, तार्किक बोलें, व्यावहारिक बोलें और उसमें नैतिक चारित्रिक गुणों का विकास करें ।

नैतिकता एवं चरित्र आदि से संबंधित बातें केवल विषय रख देने से पूरी नहीं हो सकती, न ही किसी विषय को औपचारिक विद्यालय के किसी कालांश में पढ़ा देने से । ऐसे विषय तो बालकों में स्वत: ही विकासमान है । अपने परिवेश से ही उक्त तथ्यों को बालक अपने हृदय में उतारते हैं ।

बाजार से पिता के घर आने पर सभी बालक उनका थैला देखते हैं । उस थैले में कोई बाल-पोथी देखकर खुश होता है तो कोई नई गेंद देखकर । कोई बालक भालू के ढोल बजाने पर प्रसन्न होता है तो कोई अपना नया कुर्ता देखकर । सभी बालक मजे में रहते हैं। अपने अपने ढंग से, विभिन्न आयामों से सोचते हैं ।

शाम को तारे उगते । चांदनी में हवाएं सबको शीतल कर देती हैं । सभी बच्चे मां से कहानी सुनने को बेताब हैं। मां कहानी शुरू करती । एक था राजा, बच्चे कहते, नहीं मां हमें भालू वाली कहानी सुनाओ । मां कहती । एक काला भालू था। घने जंगल में रहता। उसकी बंदर से दोस्ती थी । बच्चे कहानी सुनते आनन्द लेते और अपनी जानकारी बढ़ाते हुए कहानी सुनते । मां की गोद में नींद के आगोश में चले जाते । निद्रा देवी के अंक में समा जाते। कैसा बाल-दर्शन है । बालक मजे-मजे से किस तरह से अपने भावी जीवन को जीते हैं ।

बरसात के पानी में नहाना । गीत गाना । उछलना । यह सब बालकों को प्रिय है । मगर माता-पिता उसके लिए परेशान । छोटे बच्चों को उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों में माता-पिता द्वारा किया गया हस्तक्षेप गिजुभाई को अच्छा नहीं लगता है । बालक रोटी बनाना चाहता है । चम्पा साग संवारना चाहती है । लेकिन माता पिता को यह नहीं जंचता । तू क्या रोटी बनाएगा । नहीं कितने जतन से गूंथा है मैंने । ऐसा कहकर बालकों के काम छीने जाते हैं। उन्हें कामों से परे रखकर जाने कौनसा तथ्य माता पिता बालकों पर थोपना चाहते हैं। प्याज काटने लगे बालक को हाथ में चाकू से लग जाने की कहकर चाकू छीन लेते । बालक के एक चपत इस कार्य को करने का बोनस मिल जाता ।

आखिर कहां तक ऐसा चलेगा। रहने दो, दूधी ! रहने दो ! दूधी बरतनों से खेलती तो मां कहती, रहने दो दूधी ! रहने दो ! दूधी उस को छोड़कर पाथने बैठती तो मां कहती ''रहने दो दूधी । रहने दो। दूधी, दूधी । रहने दो।'' वहां से उठकर दूधी पल्ले से लटककर झूला झूलती तो आवाज आती, ''ये क्या कर रही हो।'' हर बार क्रोध बढ़ता चला जाता । दूधी को हर काम से रोक दिया जाता।

दूधी करे तो क्या ? क्या दूधी को उसकी पसंद के दो चार काम सौंपे नहीं जा सकते । क्या दूधी की ऊर्जा को कहीं घर के काम में नहीं खपाया जा सकता ? क्या उसे उसके आनन्द के लिए अपनी पसंद के कार्यों की छूट नहीं दी जा सकती ।

बालक बाहर से रोता आता है । ''मां मेरे पैर में लग गई। ऊं ऊं हाय मेरा पैर ।'' क्या हुआ ? अरे रोता ही रहेगा या कुछ बतायेगा। अब बोल भी सही । गधा कहीं का सारे दिन भर खेलता फांदता रहता । पढ़ने की तो जैसे नानी मर गई, मैं ने पहले ही कहा था कि बाहर मत खेलना । वो राजू तो निकम्मा है पर तू भी उससे कम नहीं । लाख मना किया मगर माने तब न ।''

क्या ऐसा कहने से बालक का घाव भर जायेगा ? क्या ऐसा करने से बालक फिर कभी खेलने नहीं जायेगा ? तब क्यों न उसे पुचकारा जाए। उसके मल्हम पट्टी की जाए, इसी दौरान उसे सावधानी से खेलने के बारे में अपना सुझाव दिया जाए ।

बालकों के खाना खाते समय कई स्थितियां देखी जा सकती हैं । वे कई बार मन वांछित सब्जी बनने पर उसे तीखा लगने की कहकर खाना न खाते । कढ़ी नहीं चटनी चाहिए । रोटी आधी नहीं पूरी चाहिये । बरतन यह नहीं वह चाहिये । मुझे केवल बड़ी वाली गिलास चाहिये । आदि-आदि।

इस तरह की बातें करके बालक रोने भी लग जाते हैं । इस समय क्या करना चाहिये । कैसे इन स्थितियों से निजात पाएं ? इसका गिजुभाई ने अच्छा चित्रण किया है । बालकों को नई चीजों में आकर्षण होता है । वे हर नई चीज को वैज्ञानिक पक्ष से देखते हैं। जिज्ञासु बालक कई बार पापा की घड़ी खोलने की जिद करता तो मम्मी से सिलाई मशीन को। इन परिस्थितियों में बालक की जिज्ञासा अवश्य शांत करनी चाहये । उसके द्वारा पूछे गये प्रश्नों को ठीक तरह से समझा बुझा देना चाहिये । बालक की यन्त्र-विशेष के प्रति रुचि की संतुष्टि का यह एक बढ़िया मौका है ।

कई बालक विद्यालय जाने से कतराते हैं । उन्हें विद्यालय जाने के नाम से बुखार आ जाता है। विद्यालय के नाम से जाड़ा लगने लगता है । ऐसे में क्या करें ?

बालकों को हरगिज जबरदस्ती से विद्यालय नहीं भेजें । गीजू भाई ने उन्हें विद्यालय में घसीट कर बुलाने वाले शिक्षकों का विरोध भी किया है । अगर बालक विद्यालय में न जाना चाहे तो बेशक उसे न भेजें। उसके लिए ऐसा वातावरण तैयार करें कि बालक विद्यालय जाने लग जाये । उसे विद्यालय अच्छा लगे। बालक के लिए विद्यालय में वही वातावरण एवं स्थिति पैदा करनी चाहिये जिस स्थिति में उसे अच्छा लगता है। विद्यालय जाने के बाद भी किसी एक ही बालक के लिए किसी शिक्षक का मत भिन्न हो सकता है। तब भिन्न मत पर उखड़ें नहीं, यही भिन्न मत किसी बालक विशेष के लिये उसे दिशा देने का सफल मौका होगा। उसकी ऊर्जा को निश्चित दिशा मिल जायेगी।

एक ही बालक के घर गणित के शिक्षक आते हैं। कहते हैं आपका लड़का बिल्कुल कमजोर है । पांचवीं कक्षा में आ गया। उसे जोड़ बाकी तक नहीं आती हैं, पहाड़े की कहो तो मानो इस पर आसमान टूट पड़ा । भई इसे सुधारो । पढ़ता लिखता नहीं । सारे दिन घूमता फिरता रहता है ।

उसी बालक के घर उसके शारीरिक शिक्षक आते हैं । कहते - क्या लड़का है, आपका । इतना सीधा निशाना मारता है कि उड़ती चिड़िया आगे न बच सके। भई मान गए आपके बालक को। गजब का तीरन्दाज है।

उसी बालक के घर भाषा के शिक्षक आते हैं । कहते - आपका लड़का कुछ नहीं कर सकता । सारे दिन नाटक खेलता रहता है। इसे तो बस नकल करवा लो । विद्यालय में सारे शिक्षकों की नकल उतारने में उस्ताद है। संभालो अपने लाड़ले को। क्या करेगा आगे जाकर !

इस तरह एक ही बालक के लिए भिन्न भिन्न वक्तव्य दिये जाते हैं । प्रत्येक शिक्षक अपनी दृष्टि से बालक को मूल्यांकित करते रहते हैं । क्या ऐसे में बालक को समग्र रूप से देख पाते हैं? क्या बालक को उसकी रुचि के कार्यों में आगे नहीं बढ़ाया जा सकता? उसकी रुचि से उसे दिशा नहीं दी जा सकती ? कई प्रश्न खड़े हो जाते हैं।

बालकों को कई बार किसी एक ही कार्य पर माता पिता एवं शिक्षक के भिन्न भिन्न मत उसे ऊहापोह में पटक देते हैं । पिताजी कहते - सुबह जल्दी जगना चाहिये । जल्दी जागने से बुद्धि बढ़ती है । जल्दी उठकर व्यायाम करना चाहिये । मां कहती - नींद पूरी होने के बाद ही उठना चाहिये । जल्दी जागने से नींद खराब होती

है, सारा दिन खराब हो जाता है। शिक्षक कहते -चाहे कुछ भी हो जाये, जल्दी उठकर पढ़ना चाहिये। सुबह सुबह याद किया गया हम जीवन भर नहीं भूलते ।

तब बालक किस की बात माने ? पिताजी की, शिक्षकों की अथवा मां की । ऐसे में बालक भ्रमित हो जाता है । किसी बात को कहने से पूर्व इस बात पर माता, पिता, शिक्षक, भाई बहन आदि सहमति बना लें । जो व्यावहारिक हो एवं बालक जो करना चाहे वही रास्ता चुनना चाहिये ।

हमारे समाज के कई पूर्वाग्रह हैं । हम पूर्वाग्रह में इतने जकड़े हैं कि किसी भी कार्य का संपन्न होना उस पूर्वाग्रह के अनुसार तय करते हैं । इस झाड़ू को खड़ी क्यों रखी ? चारपाई पर पैर लटकाकर उन्हें हिला क्यों रहे हो ? बाएं हाथ से खाना क्यों खा रहे हो ? रात में सीटी बजाने से भूत आ जायेगा ? आदि-आदि । ये सभी वक्तव्य हमें अपने मां-बापों ने दिये । उन्हीं वक्तव्यों को हम सोचे समझे बिना अगली पीढ़ी में जारी कर देते हैं, क्या ये उचित है ? इसे भी सोचें। बालकों के हर कार्य में अपनी टीका टिप्पणी ठीक नहीं है, यह करो और वह मत करो। इस प्रकार बालकों को इन दो समूहों में बांट दिया जाता है । बात-बात पर उन्हें रोका जाता है ।

बालक एक बीज की तरह है । भिन्न-भिन्न बालक भिन्न-भिन्न बीजों की तरह है, कोई आक, कोई आम तो कोई नीम । हर बीज में असीमित वृक्ष छुपा है । बरगद के छोटे से बीज में विशाल बरगद का पेड़ छुपा है । मगर इसे जरूरत है उचित हवा, पानी एवं प्रकाश की । उचित मृतिका की जिस पर वह अटल खड़ा हो सके। जरूरत है उसे खाद की जिससे वह पोषित हो सके ।

इसी प्रकार बालक के पोषण के लिए उचित हवा, पानी प्रकाश, मृतिका की आवश्यकता है । किसी आम के बीज से हम आम ही प्राप्त कर सकते हैं । आम के पेड़ से हम मीठी सेव प्राप्त नहीं कर सकते । हां यह जरूर है कि आम के पेड़ को उचित हवा, पानी, खाद आदि देकर उन्नत पुष्ट एवं रसीला बनाया जा सकता है। इसी प्रकार किसी बालक के मूल में छिपे व्यक्तित्व में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं किया जा सकता वरन् उसके व्यक्तित्व को एक दिशा देकर उसे मजबूती प्रदान की जा सकती है।

''बालक वे कार्य भले ही न करें जो आप कहते हैं, बालक वे कार्य अवश्य करते हैं जो आप करते हैं ।''

दो तोते । एक घोंसले में रहते । तोते के दोनों बच्चों को एक बहेलिये ने पकड़ा । एक को अमीर के घर बेचा । तो दूसरे को कलवार के घर । अमीर के घर पला तोता राम राम कहता । आइए बैठिए, जलपान कीजिए कहता । कलवार का तोता तीखी आवाज में बोलता, ''भागो, भागो इधर क्यों आए ? जाओ, भाग जाओ।''

इस तरह दोनों तोते अगल-अलग व्यक्तित्व को दर्शाते हैं । उनकी कार्य-शैली उनके वातावरण को दर्शाती है । बालक का परिवेश कैसा है ? वातावरण कैसा है ? यह उसको प्रभावित करता है । वातावरण का अर्थ केवल सर्दी, गर्मी, बरसात अथवा मित्र, परिवार घर की संगति ही नहीं है । स्वयं माता पिता के कार्यकलाप भी उसे प्रभावित करते हैं। उनके द्वारा की गई हर सूक्ष्मतम गतिविधि बालक के लिए वातावरण में सम्मिलित है ।

बाहर से आवाज आती है, ''राजू के पापा । क्या आप घर में हो। मुझे मिलना है । बड़ा आवश्यक कार्य है।'' राजू के पापा स्वयं राजू से कहते हैं ''जाओ, उनसे कह दो कि वे घर में नहीं है।'' इस तरह का वातावरण भी बालक को प्रभावित कर रहा है। बालक वही करेगा जो आपने किया । बाद में उसे झूठ न बोलने की बात सिखाना व्यर्थ है । बिल्कुल बेकार है ।

कई ऐसी छोटी-छोटी गतिविधियां जिन्हें हम चाहते हैं कि बालक न करें । हम उसकी तह तक जाने से पहले ही उस गतिविधि पर टिप्पणी कर देते हैं । यह ऐसा क्यों ? इस तरह के प्रश्न-चिन्हों में हम, बालक को कैद कर देते हैं । किसी भी माता-पिता, शिक्षक को अपने बालकों के लिए क्या करना चाहिये : यह कि

1. बच्चों को मारना पीटना छोड़ दें।
2. बालकों को डांटें-फटकारें नहीं ।
3. बालकों का अपमान न करें ।
4. बालकों को डरायें नहीं ।
5. बालकों को लालच देकर न समझाएं ।
6. बालकों को सर पर न चढ़ाएं ।
7. बालकों को बार-बार उपदेश न दें ।
8. बार-बार लाड़ से पुचकारने से बचें ।
9. बालक जो कार्य करवाना चाहे भले ही उसे न करें लेकिन उसे समझा दीजिए ।
10. बालक के हाथ का कार्य न छीनें, उसके काम को हल्का न मानें ।

मूलत: बालक सरल, सीधा और निष्पाप होता है। बालक जो भी सीखता है वह समाज से सीखता है । अपने बड़ों से सीखता है। झूठ, पाप, चोरी, अन्याय, दुर्व्यवहार आदि उसे समाज से विरासत में मिलते है । जो बातें आप बालक से चाहते हैं उसे कहिए मत, स्वयं कीजिए ।◆